

७ गोशालि सहसा अभिमाहमानः भद्रयः श्रीर
 शतमभ्युः दुश्च्यवनः, वृत्तमापाद व्युध्वः इन्द्रः
 युसु अरुमार्क सेनाः प्र व्युधु [१८५५]- शत्रुके किलेभे
 अपनी अक्षितसे प्रवेश करनेवाला, शत्रु पर प्रयोग करनेवाला,
 संकष्टों प्रकाशने शत्रुपर क्षेप करनेवाला, जो अपने स्वाधे
 हिलाना नहीं चाहता, शत्रुको सेनाको हटानेवाला, जिसके
 साथ कोई भी युद्ध नहीं कर सकता। ऐसा शत्रु हमारी सेनाको
 रक्षा करे।

साहस धैर्य वीरता का प्रतिक नमो
 आनस निमिषमात्रहि त्यक्त नमो
 मित्रोन्को मित्रता का परिचय नमो
 देश को राष्ट्रता का अभिमान नमो ॥
 कुटील कारस्थान छेदि आकस्मिती
 बुद्धी वरिष्ठ तन सफल विदेशनीति
 एकछत्र ध्यास सह सूर बनाम नायक
 जगता विचारक थोरवी मान्य नायक ॥
 व्यूह भेदुनी बलश्रेष्ठ निर्भीड संचारक
 बाहवा उत्तेजक जन समस्त परिवर्तक
 आधार बनामभूत अति सामान्य प्रेरक
 कलियुग का एकमात्र वीरपुत्र अभिनायक ॥

कमलाकर विश्वनाथ जाठव्ये (ASTROLOGER) २६-१२-२०१४